प्रथम अध्याय

अनामिका का जीवन एवं रचना संसार

1.1 अनामिका का व्यक्तित्व, शिक्षा एवं पारिवारिक जीवन

अनामिका का व्यक्तित्व

समकालीन हिन्दी जगत में अनामिका का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। अनामिका उन रचनाकारों में से हैं जो प्राचीनकाल से चली आ रही रूढ़ियों परम्पराओं और रीति-रिवाजों से हटकर कुछ करना चाहती है। हिन्दी काव्य जगत् में अनामिका की अपनी एक अलग पहचान है। अनामिका की रचनाएँ हमारे परिवेश, वातावरण, परिचित व्यक्ति और संपूर्ण समाज की उन सभी बातों की आँखों देखी तस्वीर खींचती हैं, जो अपनी अलग ही कहानी कहती नजर आती हैं।

समकालीन हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध लेखिका अनामिका का जन्म 17 अगस्त 1961 को राखी के एक दिन पहले बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर में एक तरफ से हरिसभा मार्ग और दूसरी तरफ से रज्जूशाह लेन कहलाने वाले मौहल्ले में हुआ था। मुजफ्फरपुर के

बारे में अनामिका की राय है, ‘‘समृद्ध विरासतों का नन्हा सा शहर मुजफ्फरपुर बूढ़े चैकीदार की उबासियों का शहर जिसकी चैकन्नी सदाशयता उसे सोने नहीं देती और परिस्थितियों की मार ऐसी है कि वह पूरा जाग भी नहीं पाती। सोने-जगाने की बीच की स्थिति में कुनमुनाता यह शहरी गालियों और गलियों, गुमटियों और गोष्ठियों का प्यारा सा वृंदावन है।”(1)

अनामिका की माँ का नाम आशा किशोर और पिता स्वर्गीय प्रो. श्यामनंदन किशोर दोनों शिक्षित थे। ‘‘इनके पिता स्वर्गीय श्यामनंदन किशोर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अत्यंत प्रिय शिष्यों में थे। आचार्य द्विवेदी ने अनामिका का नाम प्रज्ञा पारमिता रखा था।”2 इस कारण से अनामिका की रचनात्मकता की शुरूआत घर से ही मानी जा सकती है। इस बारे में अनामिका स्वयं कहती हैं- ‘बचपन में पापा से कविता की अंत्याक्षरी खेलते-खेलते जब हारने लगती तब मजबूरी का नाम महात्मा गाँधी नाम से खुद ही जोड़ तोड़ लेती कुछ पंक्तियाँ। पापा पहचान तो जाते ही, हँसते भी खूब, मगर प्वाइंट्स दे देते। कुछ दिनों बाद माँ के साथ ‘गणेश स्टोर्स जाकर वे मेरे लिए धरती के रंग की एक सुन्दर सी डायरी ले आए और कहा कि जो भी अटर-पटर करती हो, इसी में करो।’

अनामिका का बचपन व पारिवारिक जीवन

50-60 के जमाने में पटना रेडियो स्टेशन के कार्यक्रमों में उनका पसंदीदा था लोहासिंह धारावाहिक, बज्में महफिलें-जिसमें कव्वालियाँ और मुशायरे आते थे, और रसमंजरी जिसमें शास्त्रीय संगीत पर आधारित फिल्मी गाने आते थे, घर के आस पड़ोस में काम करने वाली मजदूरिनों के गाने, जिसको छत पर बैठकर अनामिका सुना करती थी। इसके अतिरिक्त स्कूल में विभिन्न प्रतियोगिताओं में काव्य रचना तथा उनमें 'प्रयुक्त बिम्बों को देखकर अध्यापकों का प्रोत्साहन उनके अंदर की रचनात्मकता को जगाने में मददगार बना रहा।

अनामिका को बचपन में घर में अकेले रहना पड़ता था। इतने बड़े घर में जो पुस्तकालय था वहीं उनका एकमात्र आश्रय था। पिताजी के साथ केवल रात में ही बातें होती थी। दिन में अकेले रहना पड़ता था इसलिए किताबें सदा उनकी प्रिय दोस्त रही। सहेलियों, संगीनियों व स्त्रियों की दुःख भरी कहानियाँ सुनने की क्षमता उनमें थी और सब कुछ सुन लेने के बाद उन्हें लेखनीबद्ध करने की इच्छा जाग जाती थी। हाई स्कूल में पढ़ते समय ही उनका पहला कविता संग्रह 'शीतल स्पर्श एक धूप को' आया। अनामिका के व्यक्तित्व पर इनके माता-पिता के अलावा इकलौते भाई अमिताभ राजन का

भी गहरा प्रभाव है। ये भारतीय प्रशासनिक सेना में ऊँचा स्थान ग्रहण कर वर्तमान में महाराष्ट्र के प्रिंसिपल सेक्रेटरी हैं। अनामिका की भाभी डॉ. कविता राजन दिल्ली विश्वविद्यालय में हिन्दी की रीडर हैं।

अनामिका की शिक्षा

'सेंट फ्रांसिस जेवियर्स एकेडमी' नामक अंग्रेजी स्कूल की पढ़ाई का भी अनामिका के जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। 1960 के दशक में छोटे शहरों में अंग्रेजी माध्यम के स्कूल बड़ी संख्या में खुले थे और उन स्कूलों में बीस बाईस रुपये तक फीस भी भरनी पड़ती थी। जो माँ-बाप फीस देने में सक्षम थे वे ही अपने बच्चों को वहाँ पर शिक्षा दे पाते थे। अंग्रेजी स्कूलों में हिन्दी बोलना सख्त मना था। आजादी के इतने वर्षों बाद भी ये सब परिस्थितियाँ बालिका अनामिका को परेशान करती थी।

अनामिका स्कूल की पढ़ाई खत्म कर बीस साल की उम्र में उच्च शिक्षा के लिए दिल्ली जाने लगी तो गाँव के लोग जो इन्हें प्यार करते थे उनसे मुजफ्फरपुर स्टेशन पर प्यारी-प्यारी और बहुत सी अंतरंग नसीहतें इन्हें मिली थी ''यह करना, यह मत करना। किसी लड़के की ओर देखना ही मत। कोई चाय पीने के लिए बुलाए तो एकदम से डाँट देना।'' 3 ये हमेशा अपनी माँ की बातों को याद

रखती हैं- ''माँ कहती थी कि अच्छा होना ही पर्याप्त नहीं होता, अच्छा दिखना भी पड़ता है।'' 4

उच्च शिक्षा की पढ़ाई के लिए अनामिका दिल्ली पहुँची तो पिता से बिछुड़ना पड़ा। अनामिका कहती हैं जब वह पहली बार हाॅस्टल गई तो पिता श्यामनंदन किशोर का पहला पत्र आया, उसमें पिताजी ने लिखा था- ''जब मन उदास हो बेटू और घर की याद सताए तो तुम्हारे हाॅस्टल के गेट के पास जो बड़ा सा पेड़ है-उसके तोतों पर गौर फरमाना। जो सबसे कम खाने वाला, सबसे शांत तोता होगा, समझना कि वही है तुम्हारी माँ और जो सबसे ज्यादा बोलने वाला, सबसे बदमाश तोता होगा-वह हूँगा मैं तुम्हारा पापा।'' 5

इस चिट्ठी के मिलने के कुछ दिन पश्चात् ही अनामिका के पिता जी का स्वर्गवास हो गया। परंतु वे आज भी अनामिका की यादों में जीवित हैं। उनके पिता जी कहते थे कि 24 घंटों में एक बार सरस्वती जिह्वा पर जरूर आती है। पता नहीं वह पल 24 घंटों में कब आ जाए। इसलिए किसी को भी भला-बुरा मत बोलो हमेशा शुभ बोलो। उन्होंने सरस्वती पर एक गीत भी लिखा था -

''अभय माँ शारदे, वर दे ।

न मन को गीत कातर दे ।।

बुझे हैं जो दिए स्वर के ।

उन्हें तू ज्योतिमय कर दे ।।’ ’ 6

अनामिका स्वयं मानती हैं कि शहरों में बसने के बावजूद भी जड़े अभी भी गाँवों, पहाड़ों या कस्बों में हैं। शहरी और ग्रामीण जीवन में आने वाली समस्याओं को आधार बनाकर अनामिका ने अपने रचना संसार में कदम रखा।

अनामिका ने अपनी शिक्षा के क्षेत्र में अंग्रेजी साहित्य को चुना। उनकी पढ़ाई पटना, लखनऊ, दिल्ली विश्वविद्यालय में पूरी हुई। ‘‘पी.एच.डी. के लिए उनके दो शीर्षक रहे हैं - अंग्रेजी में पी.एच.डी. का शीर्षक है- ‘डन क्रिटिसिज्म डाउन द एजेज’ , हिन्दी की पी.एच.डी. का शीर्षक है- ‘निराला का आंग्ल प्रभाव’ । डी.लिट. के शोध प्रबंध का विषय है ‘ट्रीटमेंट आॅफ लव एण्ड डेथ इन पोस्ट वार अमेरिकन विमेन पोएटस।’ ’ 7 परंतु लेखन के क्षेत्र में इन्होंने हमेशा हिन्दी को प्राथमिकता दी है।

सन् 24 जून 1985 को अनामिका का विवाह डाॅ. बिन्दु अमिताभ से हुआ। डाॅ. बिन्दु सफदरगंज अस्पताल में नेफ्रोलाॅजी विभाग के अध्यक्ष हैं। ‘‘वे गरीब मरीजों का भी उतना ही ध्यान रखते हैं जितना प्रधानमंत्री का।”[8] वे अमीर-गरीब में भेदभाव नहीं करते हैं।

डाॅ. बिन्दु एक ईमानदार और पारदर्शी व्यक्तित्व के धनी हैं। अनामिका के दो बेटे उत्कर्ष और उन्नयन हैं। अनामिका का दोनों बेटों से अंतरंग नाता है, जिसकी झलक इनके लेखों और कविताओं में हर कदम पर मिलती है। छोटा बेटा उन्नयन गिटार बहुत अच्छा बजाता है और स्वयं गाने लिखकर गाता है। सब आदतें उन्हें अपने परिवार से विरासत में मिली हैं। ‘‘अनामिका का श्वसुर पक्ष भी विद्यानुरागी है। इनके सास ससुर दोनों अंग्रेजी के प्रोफेसर और लेखक हैं, जेठ और देवर डाॅक्टर-इंजिनियर और बैंक पदाधिकारी हैं। इनकी जेठानी और देवरानी भी विश्वविद्यालय में रीडर हैं।’ ’ 9 मेरे स्वयं के अनुभव से अनामिका का घर एक खुला घर है जहाँ कोई अनजान व्यक्ति भी अपनेपन का अहसास पाता है।

परिवार परिचय

1. पिता - स्व. प्रोफेसर श्यामनंदन किशोर

   पूर्व कुलपति भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

   शिक्षा सलाहकारए बिहार सरकार

2. माता - प्रो. आशा किशोर

   आचार्य एवं अध्यक्षाए हिन्दी विभाग

भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालयए बिहार

3. पति- डाॅ. बिन्दु अमिताभ

अध्यक्ष ए नेफ्रोलाजी विभागए

सफदरगंज अस्पतालए नई दिल्ली

4. पुत्र - उत्कर्षएउन्नयन

1.2 अनामिका का रचना संसार

समकालीन हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अनामिका एक सवेदनशील एवं सामाजिक यथार्थ से जुडी हुई रचनाकार हंै। साहित्य में कई तत्त्व समाये रहते हंै तो उन्हें एक-एक करके समझना हमेशा मुश्किल ही नहीं, असंभव है। अनामिका हिन्दी साहित्य की अकेली रचनाकार हैं जिन्होंने दुनिया भर के स्त्री साहित्य और स्त्री आन्दोलनों का न केवल गहन अध्ययन किया है बल्कि भारतीय संदर्भों में इनकी व्याख्याओं के माध्यम से स्त्रीवाद को नया रूप प्रदान किया है। अनामिका का अनुभव संसार व्यापक है। अनामिक एक करुणामयी, संवेदनशील स्त्री की नजर से अपने समय तथा समाज को देखती हैं। ‘‘स्त्री विमर्श के दौर में स्त्रियों के संघर्ष और शक्ति का चित्रण तो अपनी-अपनी तरह से हो रहा है। लेकिन महादेवी वर्मा ने जिस वेदना और करूणा को अपनी कविता के केन्द्र

में रखा था, (वेदना में जन्म, करुणा में मिला आवास) उसका विस्तार केवल अनामिका ही कर पाती हंै।’ ’ 10

शुरूआत से लेकर आज तक के रचनात्मक जीवन में अनामिका ने अपने परिवेश को छोड़कर रचना करने की कोशिश नहीं की है। इनकी रचनाओं में वात्सल्य है, क्रोध है और आक्रोश भी है। अनामिका एक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व की धनी हैं। वह कविता, आलोचना, विमर्श, उपन्यास, कहानी, सस्मरण, अनुवाद और साक्षात्कार इत्यादि विधाओं में रचना करती हंै।

पुरस्कार

साहित्य के क्षेत्र में अनामिका की महान साधना को देखकर अनेक संस्थाओं ने इनका सम्मान भी किया है। साहित्य के क्षेत्र में निःस्वार्थ सेवा व साधना को देखकर इन्हंे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

इनके पुरस्कार हैं

1. राजभाषा परिषद् पुरस्कार (1987)
2. भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार (1995)
3. साहित्य सम्मान (1997)

4. ऋतुराज सम्मान (1998)

5. गिरिजा कुमार माथुर पुरस्कार (1998)

6. परम्परा सम्मान (2001)

7. मुनमुन सरकार पुरस्कार (2003)

8. साहित्य सेतु सम्मान (2004)

9. केदारनाथ अग्रवाल सम्मान (2008)

उपर्युक्त पुरस्कारों के अलावा अनेक जन समुदायों ने इन्हें सम्मानित किया है। जो प्यार, प्रेरणा लोगों से मिली वही इनके लिए काफी है। अनामिका बहुमुखी प्रतिभा की धनी रचनाकार है। वर्तमान में ये दिल्ली विश्वविद्यालय के सत्यवती कॉलेज में अंग्रेजी का अध्यापन कार्य कर रही हैं।

रचनाएँ

अनामिका की रचना प्रक्रिया के विभिन्न क्षेत्र निम्न हैं -

उपन्यास

1. पर कौन सुनेगा (1983)

2. मन कृष्ण, मन अर्जुन (1984)

3. अवान्तर कथा (2000)

4. दस द्वारे का पींजरा (2008)

5. तिनका तिनके पास (2008)

6. बिल्लू शेक्सपियर, पोस्ट बस्तर (2014)

विमर्श

1. स्त्रीत्व का मानचित्र (1999)

2. मन माँझने की जरूरत (2006)

3. पानी जो पत्थर पीता है (2005)

4. स्त्री विमर्श की उत्तरगाथा (2012)

5. स्वाधीनता का स्त्री पक्ष (2012)

6. स्त्री विमर्श का लोकपक्ष (2012)

7. त्रिया चरित्रं-उत्तर कांड (2012)

8. स्त्री मुक्ति साझा चूल्हा (2010)

कविता

1. शीतल स्पर्श एक धूप को (1975)

2. गलत पते की चिट्ठी (1979)

3. समय के शहर में (1990)

4. बीजाक्षर (1993)

5. अनुष्टुप (1998)

6. कविता में औरत (2004)

7. खुरदुरी हथेलियाँ (2005)

8. दूब-धान (2007)

कहानी

1. प्रतिनायक

संस्मरण

1. एक ठो शहर: एक गो लड़की (2005)

2. एक थे शेक्सपियर: एक थे चार्ल्स डिकंेस (2009)

आलोचना

1. पोस्ट एलियट पोएट्री: ए वाॅएज फ्रांम कांफिलक्ट टु आईसोलेशन

2. डन क्रिटिसिज्म डाउन दि एजेज

3. ट्रीटमेंट आफ लव ऐंड डेथ इन पा ॅस्ट वार अमेरिकन विमेन पोएटस

4. वेयर किंगफ्रिशर्स कैच फायर (फेमिनिस्ट पोएटिक्स)

अनुवाद

1. नागमंडल (गिरीश कार्नाड)

2. अब भी वसंत को तुम्हारी जरूरत है (रिल्के की कविताएँ)

3. एफ्रो-इंग्लिश पोएम्स

4. अटलांत के आर-पार (समकालीन अंग्रेजी कविता)

5. कहती हैं औरतें (विश्व साहित्य की स्त्रीवादी कविताएँ)

1. 2. 1 उपन्यासों का सामान्य परिचय

उपन्यास के बारे में अनामिका कहती हैं, ‘‘उपन्यास पुराधायन विधा है। आराम से आलथी - पालथी मारकर बैठती है और दिल खोलकर आपबीती और जगबीती सुनाती है। बीच बीच में कुछ अवांतर प्रसंग भी घटित होते हैं, फिर भी पूरा का पूरा जीवन तो ‘ज्यों

का त्यों धर दीनी चदरिया’ भाव से सामने बिछाया नहीं जा सकता।’ ’ 11

उपन्यास आज के साहित्य की सबसे प्रिय और सशक्त विद्या है। उपन्यास में मनोरंजन का तत्त्व भी अधिक होता है, साथ में जीवन को उसकी बहुमुखी छवि के साथ व्यक्त करने की शक्ति और अवकाश होता है। अनामिका एक ऐसी रचनाकार हैं जो अपने उपन्यासों में स्त्री संघर्ष और उनकी मुक्ति की कामना करती हंै। स्त्री मुक्ति किन-किन कठिन रास्तों से गुजरती हैं उसकी सजग दास्तान इनके उपन्यासों में हैं । इन्होंने छः उपन्यास लिखे हैं जो निम्न हैं -

(अ) पर कौन सुनेगा

अनामिका का यह प्रथम उपन्यास ‘पर कौन सुनेगा’ 1983 में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत उपन्यास में अनेक सामाजिक रूढ़ियों एवं असमानताओं का चित्रण है। निम्न जाति के लोग जीवन के हर क्षेत्र में नीचे ही रह जाने के लिए अभिशप्त हैं। उन्हें अपनी मंजिल तक पहुँचने के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उपन्यास का प्रारंभ इस तरह है - ‘‘यह एक टूटा-सा बायस्कोप है - कथा नहीं, उपन्यास नहीं। आप इसे पढ़ नहीं सकते, बाँच नहीं सकते,

सुन नहीं सकते, सिर्फ देख सकते हैं। इसलिए शास्त्रीय पाठकों, वाचकों, श्रोताओं - जरा बाएँ हो जाइए। रास्ता खाली हो तो मैं अपनी दुनिया बैठाऊँ और दर्शक उगाहूँ।' ' 12

कृष्णकांत, अफजल, मीरा, उमा, सलोनी आदि उपन्यास के मुख्यपात्र हैं। कान्त एक क्रांतिकारी युवक है। कान्त के क्रांतिकारी कदमों के कारण उसको घर से निकाल दिया जाता है। अफजल उसको सबकी निगाहों से बचाकर अपने घर ले जाता है। उसी मौहल्ले में सनु और सनु की माँ रहती थी। सनु का कान्त से परिचय हो जाता है। कान्त के जीवन में कनक, मीरा, उमा, सलोनी, मालती आदि स्त्रियाँ आती जाती रहती हैं।' ' सनु की कुछ बातें कनक से मिलती थी, इसलिए कभी कभी कान्त यह सोचने के लिए विवश हो जाता कि ''हर लड़की, थोड़े बहुत के हेर-फेर से आधी गाय होती है, आधी बिल्ली। फिर उन्हें स्वयं ही हँसी आ गयी-यह तेवर उनका अपना नहीं।............. नाउ यू शट अप। मुझे खूब पता है कि लड़के आधा भेड़िये होते हैं, आधा बंदर।' ' 13

मीरा अपने से ऊँची जाति के लड़के आलोक से प्यार करती है। परिवेश के अनुकूल मीरा का विवाह सुभाष से हो जाता है। मीरा अपनी माँ की मृत्यु के बाद कान्त के घर आ जाती है। अंत में वह कान्त को छोड़कर दूर चली जाती है। मीरा कान्त के बारे में ही

सोचती हुई बाहर निकलती है - कांत उसके लिए प्रेरणा थे, भक्ति थे, द्वन्द्व भी थे, ऐसे वह आगे बढ़ती और फिर आगे बढ़ती हुई सारी दुनिया उसका घर थी। किसी की आँखों के आँसुओं में कान्त की ही प्रतिछाया हर आँख अब उसके लिए मंदिर थी हर आँसू अमृत और आँसुओं की राह कहीं खत्म नहीं होती।

उपन्यास में समाज के हर क्षेत्र के लोगों का चित्रण है। नगरीय परिवेश में लोग अपने तक सीमित रहते हैं। दूसरे का साथ देने से भी डरते हैं, हिचकते हैं। गली में रहने वाले आम लोगों के साथ श्यामल सरकार जैसे समाज के उच्च जाति के लोगों का भी चित्रण किया गया है। कांत जैसे लोगों के अन्याय से लड़ने पर भी समाज में कुछ सुधार नहीं हो रहा है। इन सब अवस्थाओं का चित्रण इस उपन्यास में हैं।

(आ) मन कृष्ण,मन अर्जुन

अनामिका का ष्मन कृष्णए मन अर्जुनष् उपन्यास सन् 1984 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास पत्राचार शैली में लिखा गया आधुनिकतम मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। यहाँ पर पात्र जिन बातों के कारणवश सामने नहीं आ पाते, उन्हें पत्रों में सरलता से व्यक्त कर देते हैं। अपने-अपने विचार, भाव , रुचि-अरुचि पत्रों के द्वारा प्रकट किए जा सकते हंै।

इस उपन्यास के दो मुख्य स्त्री पात्र हैं-शिखा और वसुधा जो पूरे उपन्यास में पत्राचार द्वारा ही स्वंय को व्यक्त करती हैं। अनामिका उन स्त्री पात्रांे के बारे में कहती हैं शिशखा और वसुधा एक ही चरित्र के दो पक्ष भी हो सकते हैं। दो चरित्रों का एक शाश्वत पक्ष भी है क्योंकि मन ही कृष्ण है, मन ही अर्जुन। विभ्रम में भी वही पड़ता है, उदबुद्ध भी वही करता है।’ ’ 14

इस उपन्यास का प्रांरभ शिखा के पत्र से होता है। शिखा दिल्ली विश्वविद्यालय में पी. एच. डी. करते-करते कॉलेज में पढ़ाती भी हैं। उसके बाबू जी हैं और एक भाई बब्लू जो पढ़ाई करता है। वसुधा ने संगीत में डिप्लोमा किया है, तथा संगीत सिखाती भी हैं। उसके परिवार में माँ, भाई, दीपू, बहन, पिंकी और तीन छोटे भाई-बहन हैं। वह नौकरी नहीं करती। संगीत का ट्युशन लेती है। शिखा और वसुधा दोनों सहेलियाँ हैं। जो पत्राचार में ही अपनी बातों को व्यक्त करती हैं। शिखा और वसु का व्यवहार छरू-छरू महिने रूक जाता है। फिर फुर्सत मिलने पर लिखती हैं।

इस उपन्यास की कहानी पत्राचार शैली में ही चलती है और अंत तक वह पत्रों में ही खत्म होती है। यह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इस उपन्यास को स्त्री के मन को लेकर लिखा गया है। उसके मन में चलने वाले द्वन्द्व को दर्शाया गया है।

(इ) अवान्तर कथा

'अवान्तर कथा' नामक उपन्यास का प्रकाशन सन् 2000 में हुआ। लेखिका ने इस उपन्यास को चार खण्डों में विभाजित किया है। प्रथम खण्ड- ष्कुछ अबाबीलें, कुछ सिंदबादष्। दूसरा खण्ड- 'ईश्वर के जासूस' । तीसरा खण्ड-'दो एकान्त थे' और चैथा खण्ड ष्एक घटाटोप शामः धड़कनों और लकड़हारों की' हैं। प्रथम खण्ड में दिल्ली की एक पत्रकार लड़की तरू तथा बिहार से आए वृद्ध दंपत्ति से बातचीत के माध्यम से अनामिका ने बिहार प्रांत के युवा शिक्षार्थियों की मानसिकता, उनके जीवन का यथार्थ, भ्रष्टाचार और जीवन मूल्यों एवं आदर्शों से भटकते विद्यार्थियों का परिचय दिया गया है। बिहार से दिल्ली आए विद्यार्थियों की संघर्षमय स्थिति, अध्ययन की समुचित व्यवस्था का अभाव, रहने और खाने-पीने संबंधी तकलीफें विधार्थियों को सहनी पड़ती थी। इतने संघर्षपूर्ण और अभावग्रस्त जीवन के बावजूद भी बिहार के शिक्षार्थियों का बहुत अधिक संख्या में दिल्ली में देखते हुए अनामिका मजाक स्वरूप कहती हैं। ''दिल्ली के दस में तीन 'विहार' तो पेट काटकर अच्छे खासे 'बिहार' हो ही चले हैं।श्15

दूसरे खण्ड ष्ईश्वर के जासूसष् में अनामय नामक पात्र है। यह एक क्रान्तिकारी युवक है। इसमे तरू ए चेतना ए नन्ना ए वसुन्धरा

आदि प्रमुख स्त्री पात्र हंै। वसुन्धरा के चरित्र द्वारा स्त्री पुरुष के विवाहेत्तर संबंधों की शुद्धता और पवित्रता दर्शायी गई है। वसुंधरा कहती हंै- ‘आसक्ति हमेशा टुच्ची होए जरूरी तो नहीं। उदात्त और परिष्कृतए गंभीर और व्यापक प्रेम इतना नायाब तो नहीं, फिर लोगों को विश्वास करते- करते इतनी देर क्यों लग जाती है कि स्त्री और पुरुष का संबंध विवाह के पार भी शुभ और सच्चा हो सकता है ?’’16 इस उपन्यास मंे नन्ना गरीब व असहाय वृद्धों व बच्चांे को आसरा देती है। नन्ना का पति दीनानाथ गुस्सैल प्रवृति का था। सुधाकर नन्ना का दोस्त है।सुधाकर की बेटी दीक्षा भी नन्ना के पास रहती थी। नन्ना यह मानती है कि पति-पत्नी का साथ अधिकांशतरू एक आदत मात्र होता है। नन्ना के द्वारा निम्नवर्गीय बच्चांे के प्रति स्नेह और अपनत्व के द्वारा अनामिका ने इस उपन्यास मंे दलितों के प्रति सहानुभूति प्रकट की है।

तीसरे खण्ड ‘दो एकान्त थे’ में नारी मन की पति से अपेक्षाएँ पूर्ण न होने पर व्यथापूर्ण कुण्ठा, अपनी अस्मिता और पहचान की इच्छाएँ आदि भावनाआंे को उजागर किया है। नारीगत भावनाओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया गया है। नन्ना का स्वभाव सहज, सरल है। वह बेसहारा को आसरा देती है। उन्होंने तो अपना जीवन दर्शन ही बना रखा था। ‘‘आना है आ जाओ स्वागत् है, जाना है चले जाओ शुभकामनाएँ ।’ ’ 17 इसी खण्ड में दीक्षा के पति की

गुंडागर्दी, सरकारी स्तर पर फैले अन्याय और भ्रष्टाचार का यथार्थ में चित्रण किया गया है। वह अपने पति के अत्याचारांे से तंग आकर नन्ना के पास रहने लगी।

शिरीन की सास विद्युत्वर्णी का चरित्र गहरे जीवन दर्शन का परिचायक है। वे परिवार की स्वार्थपूर्ण प्रवृति से त्रस्त हो गई हंै। वह कहती हैं कि जीवन मंे किसी सामाजिक उद्देश्य का होना आवश्यक है। यदि कोई आवश्यक उद्देश्य न हो तो व्यक्ति की जिन्दगी - ‘‘बचपन में दर्जी के हाथ मंे रहती है एयौवन में शो-केस के हंैगरों मंे टंगी हुई और बुढ़ापा आते-आते धूल भरे बक्से मंे बंद-बंद लगती हैं- गुमसाइन महकने । मुझ जैसी परिवारमुखी वृद्धाओं के लिए सर्वाइवल का तो बस एक ही सूत्र रह जाता है- ‘‘बटुए का मुँह खुला रखोएपर अपना मुँह बंद।’ ’ 18

उपन्यास के अनं्तिम खण्ड ‘एक घटाटोप: शाम धड़कनों और लकड़हारों कीए में नन्ना और उसके परिवार की आंतरिक परिस्थितियांे को दर्शाया गया है। नन्ना की बहू विद्योतमा को नन्ना के स्थायी अतिथि अच्छे नहीं लगते हैं। इन सबके चलते नन्ना और विद्योतमा में नोक-झोंक हो जाती हंै। नन्ना घर छोड़कर जाने को तैयार हो जाती है। सब कह रहे थे नन्ना का बेटा ही इन्हें रोक सकता है। संयम नन्ना का बेटा है। संयम के बारे में

अनामिका लिखती हैं-“बड़ा फरार किस्म का दिमाग था संयम का। वापस अपनी जगह लौटने में बहुत दिन लगा देता था, पर लौट आता था, यही खैरियत थी -‘जैसे उड़ी जहाज को पंछी पुनि जहाज को आवै।’ ’ 19

इन अवान्तर कथाओं को समेटते हुए भी अनामिका नए युग और समाज में होने वाले सांस्कृतिक परिवर्तनों के प्रति काफी जागरूक रहती हैं।

(ई) दस द्वारे का पींजरा

अनामिका का ‘दस द्वारे पींजरा’ उपन्यास सन् 2008 में प्रकाशित हुआ। अनामिका के इस उपन्यास के बारे में नामवर सिंह लिखते हैं- “अनामिका के नए उपन्यास ‘दस द्वारे का पींजरा’ में जो चीज सबसे पहले प्रभावित करती हैं वह है इसका ढांचा। उपन्यास तो अच्छे लिखे जाते हैं, मगर बहुत कम लोग इसके सांचे और ढांचे को बदल पाते हैं, अनामिका ने बदला है। यह सीधे-सीधे धारावाहिक आख्यान कहता हुआ उपन्यास नहीं है बल्कि एक कथा कोलाज है। इसमें कई लोगों के मुख से कहानी कहलवाई गई हं ै इसके दो हिस्से हं ै और दोनों को आपस में जोड़ने का सूत्र है-स्त्री मुक्ति।’ ’ 20

अनामिका का यह उपन्यास इनके बचपन में स्कूल के दिनों की ‘मासूमा नाज’ सहपाठी की स्मृति है। यह उपन्यास नारी

चिन्तन पर आधारित एक सशक्त उपन्यास है। यह उपन्यास हमें समाज में स्त्री की बेहतर जिन्दगी की कामना करने तथा उसके लिए अनेक ऐतिहासिक पात्रों से मुलाकात करवाता है। इस उपन्यास में लेखिका पितृसत्ता के बंधन में जकड़ी स्त्री के लिए मुक्ति की राह तलाशती है। यह उपन्यास दो भागों में विभाजित है, इसकी दो नायिकाएँ हैं- पंडिता रमाबाई और ढेला बाई।

रमाबाई और ढेलाबाई को दयनीय अवस्था में दिखाया गया है। रमा का जीवन आरम्भ से ही संघर्षमय रहा है। रमा का विवाह सदाव्रत से होता है परन्तु विवाह के कुछ समय पश्चात् ही सदाव्रत की मृत्यु हो जाती है। रमाबाई का वृतांत उस दौर की कथा है, जब स्त्री शिक्षा को अपराध माना जाता था। ‘‘चैका-चूल्हा भूलकर स्त्रियाँ ज्ञान-विज्ञान में रस लेने लगे तो सारी दिनचर्या बदल जायेगी।’ ’ 21 इसी दौर में दलित समाज सुधारक ज्योतिबा फुले अपनी पत्नी सावित्री बा फुले की शिक्षा को लेकर अपमान और यातनाएँ झेल रहे थे, ‘‘पत्नी को पढ़ा-लिखा कर खराब करने के अपराध में उन दोनों को घर से निकाल दिया गया तो भी पढ़ाई जारी रखी।’ ’ 22 पंडिता रमाबाई और आनन्दीबाई जैसी स्त्रियों के जरिये 19वीं सदी के सुधारवादी आन्दोलन के बारे में भी जिक्र है।

ढेलाबाई का जीवन भी संघर्षमय रहा है। हलुवंत सहाय के कहने पर महेन्द्र मिसिर उसका अपहरण करता है। ढेला बाई हलुवंत सहाय के साथ रहने को मजबूर होती हंै। हलुवंत सहाय अंग्रेज अफसरों को प्रसन्न करने के लिए इसका उपयोग करता है। एक वेश्या होते हुए भी वह स्वंतत्रता के लिए लड़ रहे क्रांतिकारियों की धन और आश्रय से सहायता करती है। ढेलाबाई वेश्या समाज में पली बढ़ी है। इन्हें वेश्या और विवाहिता दोनों का अनुभव है। ढेलाबाई को विवाहिता और वेश्या में विशेष अंतर नहीं दिखता। वेश्या के पास आर्थिक सामथ्र्य है और विवाहिता के पास विवशता। ‘‘पहले रुपया मेरे हाथ में आता था अब मुख्तार साहब के हाथ में आता है। पहले पावों में बस घुंघरू थेय अब मोटी जंजीरे हैं - पाबंदियों की।’ ’ 23

उपन्यास में जोगिनिया कोठी पर भी पर्याप्त बातें की गई है। अफसाना बाई और काननबाला भी प्रमुख स्त्री पात्र है। इसका एक प्रमुख चरित्र है महेन्द्र मिश्र जो बिहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के भोजपुरी भाषी इलाके में महेन्द्र मिसिर के नाम से जाने जाते हैं। उनके बारे में एक गीत बहुत प्रसिद्ध है - ‘‘नोटवा के छापि-छापि रुपिया बनउली हो महेन्द्र मिसिर।’ ’ 24

इस उपन्यास में जीवन की कितनी ही दिशाएँ और द्वन्द्व हैं। इसमें हिन्दू समाज का ब्राह्मणवादी, रूढ़ीवादी, प्रेम, स्त्री-पुरुष

संबंधों का विमर्श, समाज सुधार आन्दोलन आदि तत्कालीन भारतीय समाज का परिदृश्य है। इसमें स्त्री मुक्ति के लिए एक प्रसंग है-''मुक्ति भी स्त्रीलिंग ही तो है। कभी अकेली नहीं मिलती। हरदम वह झुण्ड में ही हँसती बोलती चलती है। थेरियों का झुण्ड हो या जैन साध्वियों, चिड़ियों और स्त्रियों का यह वृहत्तर सखाभाव रमाबाई को हमेशा ही आकर्षित करता।' ' 25

इस उपन्यास के नाम में भी गहरा संदेश है-''पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ मिलकर शरीर के दस द्वार बनते हैं, जिसमें आत्मा बस्ती है। इस तरह स्त्री की मुक्ति केवल बुद्धि की मुक्ति नहीं होती, केवल हृदय की मुक्ति नहीं होती, बल्कि तमाम इंद्रियों की मुक्ति भी होती है।' ' 26

यह उपन्यास बीते हुए काल की ही कहानी नहीं है, वरन आज भी पिंजरे से बाहर आने को झटपटाती स्त्री मन की व्यथा-कथा है।

(3) तिनका तिनके पास

अनामिका का 'तिनका तिनके पास' उपन्यास सन् 2008 में प्रकाशित हुआ। लेखिका ने यह भी स्पष्ट किया है कि महेन्द्र मिसिर की शिष्या ढेला बाई का कोठा मुजफ्फरपुर में उनके बुआ के ससुराल के पीछे है और यह भी कहा है कि इस उपन्यास की नायिका 'तारा' उन्हीं की एक छात्रा है।

'तिनका तिनके पास' उपन्यास में आधुनिक बोध है। स्त्री श्रम में सौंदर्य की तलाश करती अनामिका की आँखें देश के यथार्थ की जड़ों तक जा पहुँचती हैं। इस उपन्यास में साम्प्रदायिकता के मुद्दे पर भी बात उठाई गई है। यहाँ हिन्दू मुस्लिम के नाम पर 'वाद' चलता है। इस 'वाद' को डाॅ. अंसारी और कक्कड़ साहब के विवादों में स्पष्ट किया गया है -''भारत में दो राष्ट्र थे और कुल मिलाकर यह छवि उभरे कि देशी हिन्दुओं पर विदेशी मुस्लमानांेें ने विजय प्राप्त की। यह विदेशी मुस्लिम अत्याचार 600 वर्षों तक चलता रहा। वास्तव में अंग्रेजों ने आकर हिन्दुओं को इससे मुक्त किया।'' 27

अंसारी साहब कक्कड़ जी से यह भी कहते हैं - ''1857ई. से अंग्रेजों ने यह भी सबक लिया कि हिन्दू-मुस्लिम एकता तोड़े बिना भारत पर राज करना असंभव होगा।'' 28

तारा, शिरीन, अवंतिका आदि प्रमुख स्त्री पात्र हैं और भी कई स्त्री पात्र उपन्यास में हैं। उपन्यास की शुरूआत मुजफ्फरपुर के सदर अस्पताल के जच्चा-बच्चा वार्ड से होती है। उपन्यास की नायिका तारा का जीवन भी संघर्षमय रहा है। तारा की माँ अपने पति को ढूढंते हुए दिल्ली आती है। दिल्ली में तारा की माँ को रिश्ते के देवर ने धोखे से कोठे पर बेच डाला, जिसने पिता के बारे में सूचना देकर

बुलवाया था। तारा भी उसी माहौल में पढ़ती रही, धंधेवाली की बेटी बनकर। माँ उसे इस माहौल से परे रखने की कोशिश में पिता के पास आश्रम में छोड़ आती है। उच्च शिक्षा के लिए तारा अमेरिका जाती है। रोजगार के कई साधनों में से उसने वेश्यावृत्ति को चुना। तारा शिक्षित है और इसलिए देह के धंधे में उतरने के बावजूद उसकी मानवीयता या नैतिकता बोध समाप्त नहीं होता, जैसा कि मान लिया जाता है पेशे में उतरने वाली स्त्रियों के पास भी उच्च नैतिकता बोध का सर्वथा अभाव होता है।

तारा के संघर्ष में उसे सहयोगियों के रूप में साहिल, शिरीन और अवंतिका जैसे लोगों का सहयोग मिलता है। उसने जीवन के इस सूत्र को जाना कि मुक्ति के रास्ते अकेले नहीं मिलते। देह धंधे के कारोबार में कितनी ही जाने सिसक रही है। तारा उनकों भी अपनी तरह मुक्त कराने का बीड़ा उठाती हैं। 'आधारशिला' संस्था के माध्यम से स्त्रियों को स्वावलंबी बनाने की कोशिश करती है। तारा इसके साथ-साथ विभिन्न संस्थाओं में लेक्चर देने का भी कार्य करती है। तारा का जीवन अपने में स्त्री जीवन कई-कई रूपों को उजागर करता है। उसने अपने अनुभवों से जाना है कि पुरुष या तो राक्षस है या बुतरू। पुरुष का वास्तविक विकास होना अभी शेष है। ''स्त्रियाँ तो मातृभाव में हैं भी, लेकिन पुरुष बारहवीं के जिद्दी बच्चे की मनःस्थिति से बाहर नहीं निकल पाये।'' 29

'जोगिनिया कोठी' इस उपन्यास में मुख्य रूप से उभर रही है जो पहले वेश्याओं तथा उनके बच्चों के लिए आवास केन्द्र था। इस उपन्यास की रचना प्रक्रिया के बारे में अनामिका कहती हंै - ''कानन बाला के छोड़े बस इतने संकेत मेरे पास हैं इन्हीं के आधार पर मुझे दो जीवनियाँ पूरी करनी हैं और उन्हंे उपन्यास के रूप में ढालना है। -- यह मेरी नन्ही सी जान दो-एक साल की हो ले तो दिल्ली आकाशवाणी के आर्काइव में पंडिता रमाबाई पर बना वह रेडियो रूप जरूर ढूँढंॅूगी। पिछली पीढ़ी की संघर्ष सिद्ध औरतों के जीवन की परतें खोलनी जरूरी हैं।' ' 30

अनामिका ने अपने इस उपन्यास में दिल्ली, मुजफ्फरपुर, अमेरिका और लंदन आदि स्थानों का जिक्र किया है। इस उपन्यास में वेश्या और गृहस्थ स्त्री के संत्रस्त जीवन के साथ दलित आदिवासी स्त्रियों के जीवन को भी दर्शाया है। नारी के उन सभी रूपों को समेटने की कोशिश की है जो शोषण का शिकार हैं।

(ऊ) बिल्लू शेक्सपियर: पोस्ट बस्तर

अनामिका का यह उपन्यास सन् 2014 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास तीन खण्डों में विभाजित है। पहला खण्ड़ 'बिल्लू की डायरी आत्मा के जासूस' , दूसरा खण्ड़ ' सत्य अपना प्रमाण खुद है: चिट्ठियों की गवाही' और तीसरा खण्ड़ 'वह हँसी बहुत कुछ कहती

थी’ हैं। इस उपन्यास के बिल्लू, मान्यता मैडम, डाॅ. टंडन, आशीष मुखर्जी, शेफालिका, आशय मेहरा आदि प्रमुख पात्र हैं। इसमें बिल्लू किंडों का वास्तविक नाम विलियम है। यह नाम उसको फादर फरनैंडिस ने दिया था।

मान्यता मैडम इस उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र है। ये आदिवासी बच्चों को पढ़ाती हैं और शेक्सपियर के नाटकों का मंचन करवाती हैं। डाॅ. टंडन मान्यता मैडम के पति हैं। इनका स्वभाव बड़ा ही क्रोधी प्रवृत्ति का है। ये मान्यता को डाँटते, फटकारते रहते थे परन्तु रिश्ता तोड़ने में विश्वास नहीं करते थे। ‘‘एक बार इनके गुस्से का अंधड़ झेल जाए कोई और उस ‘बदसूरत व्यवहार की कैफीयत भी नहीं मांगे तो फिर वे धीरे-धीरे सहज होकर कृपा करने के मूड में आ जाते थे जैसे कि ज्यादातर सामंत और पितृसत्ताक आ जाते हैं।’ ’ 31

मान्यता मैडम की माँ को सिर्फ डाॅ. टंडन के ईलाज पर भरोसा था जब उनकी तबीयत खराब होती तो वे वहाँ आ जाती थी। मान्यता मैडम का भाई आशय मेहरा बस्तर जिले के पुलिस कमिश्नर थे। पहले दोनों भाई बहन में संबंध बहुत गहरा था परन्तु अब संबंध वैसे नहीं रहे क्योंकि इनकों भी मान्यता का आदिवासी बच्चों को पढ़ाना और उनके लिए कुछ करना अच्छा नहीं लगता था। इस पर मान्यता कहती हैं ‘‘भाई हो या पति, उसी हद तक सदय रह

पाता है, जब तक स्त्री उसकी चाभी पर चलने वाली गुड़िया रहती है, स्वतंत्र चेता स्त्री किसी को भी अच्छी नहीं लगती।’ ’ 32

श्रीमती मान्यता टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के बिलासपुर सैंटर में अंग्रेजी साहित्य की कोर्स-कोआर्डिनेटर थी। ये ‘कथासत्रम्’ और ‘शेक्सपियर बिरसा नाट्य मंडल’ आदिवासी लोगों को जागरूक करने के लिए बिल्लू और आशीष मुखर्जी की मदद से चलाती हैं। एक दिन अचानक ही बड़ी संदेहपूर्ण स्थिति में मान्यता मैडम का देहांत हो गया। कोई इनकी मृत्यु को हत्या का नाम देते, कोई आत्महत्या का ? इनकी हत्या का दोषी प्रो. आशीष मुखर्जी को ठहराया जाता है। आशीष मुखर्जी ममता मैडम के दोस्त हैं। ये सोआस में पी.एच.डी. करके वहीं नौकरी करने लगे। इन दोनों के संबंध में पहले से ही अनेक अफवाहें फैली हुई थी । ‘‘स्त्री संबंधी कोई भी ‘अपवाद’ उसके यौन-जीवन और चरित्र की विषम अटकलों से पटा पड़ा होता है। --- एक बड़ी अफवाह यह थी कि श्रीमती टंडन के तीनों बच्चे बालपन के उनके ‘प्रेमी’ , उन्हीं आशीष मुखर्जी के हैं।’ ’ 33

श्रीमती टंडन के कहने पर ही ये विदेश की नौकरी छोड़कर छत्तीसगढ़ आ गए। आशीष मुखर्जी को मान्यता की हत्या के जुर्म में पुलिस पकड़ ले जाती है। शेफालिका मान्यता मैडम की बेटी हैं। ये बिल्लू की सहपाठी भी रही हैं। ये माँ की मृत्यु के बाद अपनी

विवाहिता बहन के पास चली जाती हैं। ये मान्यता की चिट्ठियाँ भी साथ ले जाती हैं। शेफालिका और बिल्लू मान्यता की मौत की गुत्थी सुलझाने में लग जाते हैं।

डाॅ. टंडन के कहने पर शेफालिका ने छत्तीसगढ़ में निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा और एम.एल.ए. बनी। उन्होंने प्रो. मुखर्जी पर लगे सारे अभियोग वापस ले लिए और आशीष मुखर्जी रिहा हो गए। प्रो. मुखर्जी की बेटी का दाखिला भी 'कथासत्रम्' के प्रयोगात्मक विद्यालय में करवा दिया। बिल्लू कहता है ''पुलिस की तहकीकात बन्द हो चुकी है पर मेरी फाइल आजीवन बंद नहीं होगी। आजीवन मैं उन प्रश्नों से टकराता हुआ उस वृहत्तर न्याय की कोशिश करता रहूँगा जिसकी अपेक्षा श्रीमती टंडन को इस कुटिल और कठिन समाज से थी।'' 34

अनामिका ने इस उपन्यास में स्त्री जीवन और आदिवासी जीवन को चित्रित किया है। इस उपन्यास में स्त्री जीवन में आने वाली समस्याओं को उजागर किया है। इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य है कि जो साधारण मनुष्य शिक्षा और आधुनिक जीवन से वंचित रह गए। पिछडे समुदाय अपनी सम्भावनाएँ विकसित करें और शोषक या भ्रामक तत्त्वों से सुरक्षित रह सकें। ये भी समाज में

अपना महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण करें और सामान्य जीवन व्यतीत कर सकें।

1.2.2 संस्मरणों का सामान्य परिचय

(अ) एक ठो शहर: एक गो लड़की

अनामिका का संस्मरणात्मक लेखों का संग्रह 'एक ठो शहर: एक गो लड़की' 2005 में प्रकाशित हुआ। इस संस्मरण में अनामिका अपने जन्म स्थान मुजफ्फरपुर के बारे में बताती हैं। भूमिका में प्रमोद कुमार सिंह ने कहा है कि मुजफ्फरपुर अपने नारायण प्रैस के लिए जाना जाता था। परन्तु आज मुजफ्फरपुर वाले नारायण प्रैस के बारे में नहीं जानते। पहले मुजफ्फरपुर पत्रिकाओं, मुद्रणालयों तथा प्रकाशन केन्द्रों के लिए मशहूर था लेकिन आज ऐसा नहीं है।

मुजफ्फरपुर आज अपराधियों का शहर बन गया है-''बच्चे भी परिकथाएँ नहीं सुनते। अपराध कथाएँ सुनकर बड़े हो रहे हैं। यहाँ, फिर भी लगता है, कुछ भीतर नहीं बदला। एक भयानक मुखौटा औढे, कच्चे खांव बनकर जो लोग इधर-उधर घूम रहे हैं-स्वांग हैं, यह एक अभी मुखौटा उतारकर हा-हा हँस देंगे और मैं भी हँस पडँूगी-क्या जाने कितने बरस बाद।'' 35

अनामिक ने इस संस्मरण में का ॅलेज के दोस्तों के बारे में स्टाफ रूम के सहयोगी अध्यापकों के बारे में विस्तार से लिखा है। अनामिका समाज और समाज मंे आए बदलावों से चिंतित हंै। ये अपनी बचपन की यादों में खो जाती हैं। ये कहती हैं, बचपन की होली दिल्ली की होली से अलग होती थी। ये बचपन में सरस्वती पूजा के समय होने वाली तैयारियों के बारे मंे भी बताती हैं। अनामिका का अपने पिता जी से बहुत लगाव था। इन्हंे अपने पिता की दो बातंे आज भी याद हैं-एक तो सुबह ब्रह्ममुर्हूत में उठना और दूसरा हमेशा शुभ बोलना, किसी को भी गलत ना बोलना।

मुजफ्फरपुर से दिल्ली तक की यात्रा में परिचित सभी लोगों के बारे में किताब में बताया गया है जैसे भगवान राजू मास्टर, मिस्टर हा ॅग, कम्बलशाह का मजार, बिरजू काका और आयशा अम्मी आदि। इसमें कुछ डायरी के अंश हैं जिसमें स्त्री विमर्श और सामाजिक अनाचारों पर बाते की गई है। संस्मरण के बीच में कुछ कविताएँ भी हैं।

(आ) एक थे शेक्सपियर: एक थे चाल्र्स डिकेन्स

यह संस्मरणात्मक लेखों का संग्रह है। इसका प्रकाशन 2009 में हुआ। इसके दो भाग हैं। पहला भाग ‘शेक्सपियर’ के नाटक

पात्रों के बारे में हैं, दूसरा भाग 'चाल्र्स डिकेन्स' है। इसमें उनके नाटकों या उपन्यासों की समीक्षा या उनका चरित्र चित्रण नहीं है अपितु उनसे जुड़े हुए पात्रों और घटनाओं को अनामिका अपने तरीके से प्रस्तुत करती हंै। अनामिका इसमें शेक्सपियर और चाल्र्स डिकेन्स की जीवनियों को अपने अंदाज में प्रस्तुत करती हैं। शेक्सपियर की जीवनी को जैसा कि उन्होंने कहा था जीवन एक रंग है उसी के आधार पर सात भागों में विभाजित करके अनुदित कविताओं के माध्यम से अनामिका प्रस्तुत करती है। इसमें पितृसत्ता और स्त्री विमर्श पर भी लिखा गया है। अनामिका शेक्सपियर के नाटकों और चाल्र्स डिकेन्स के उपन्यासों के पा्त्रों और घटनाओं को अपने अंदाज में प्रस्तुत करती हैं।

1.2.3 विमर्शों का सामान्य परिचय

सदियों से होते आए शोषण और दमन के प्रति स्त्री चेतना ने ही स्त्री विमर्श को जन्म दिया। स्त्री विमर्श - स्त्री की आत्म चेतना, आत्म सम्मान, आत्म गौरव, समता और समानाधिकार है। 20वीं सदी के अंतिम दो दशक में इस विचारधारा को पनपने के लिए उपयुक्त परिवेश मिला है। स्त्री विमर्श पुरुष जाति का कोई विरोध या उससे प्रतिस्पर्धा नहीं करता। यह पुरुषों के विरूद्ध कोई अभियान नहीं

अपितु नारी को सहज मानवीय गरिमा में बनाए रखने की विचारणा है। इसका विरोध पुरुष मानसिकता से है न कि पुरुष से।

सन् 1999 में अनामिका का पहला स्त्री विमर्श विषयक पुस्तक 'स्त्रीत्व का मानचित्र' प्रकाशित हुई। इसमें आठ महत्वपूर्ण लेख तथा परिशिष्ट के रूप में 5 और लेख भी दिए गए हैं। इसमें हिन्दी व विदेशी साहित्य की लगभग चार-साढ़े चार सौ पुस्तकों के गहन अध्ययन के पश्चात् लिखा गया है। इसमें पश्चिमी दार्शनिकों के वैदिक ग्रंथों से लेकर साहित्य तक को टटोलती हैं। इसमें स्त्री आंदोलन, भारतीय आर्ष ग्रंथ, लोकसाहित्य, भारतीय साहित्यः अंतः सलिला का महोच्चार, समन्वित नारीवाद, भारतीय देवियाँ, स्त्री कथाकारों की स्त्रियों आदि का विवरण है।

अनामिका कहती हैं-''स्त्रीवादी आंदोलन धनी महिलाओं का कोरा वाग्विलास भर नहीं है। स्त्रीत्ववाद को उछलकूद के निरे प्रतिक्रियावाद से जोड़कर देखना भी एक गहन राजनीतिक षड्यंत्र है। जिससे हम आज तक उभर नहीं पाए हैं।'' 36

'मन मांझने की जरूरत' नामक स्त्री विमर्श पर आधारित किताब का प्रकाशन 2006 में हुआ। इसमें अनामिका लिखती हैं- ''जेंडर सेंसिटाहजेशन का सबसे उपयुक्त सांस्कृतिक पर्याय मुझे तो मर्दों का मन मांझना सूझ रहा है। खासा कठिन उपक्रम है, ढाबे की

डेकची है मर्दों का मन। ऐसी कालिख और इतनी चिकनाई इसकी आंकी-बांकी हिंडेलियम पर चढ़ी हैं कि उँगलियाँ थक जाएँ, सूज जाएँ, नाखून टूट जाएँ, जूने (स्क्रबर) के तार से लहू-लुहान हो जाएँ हथेली पर गह-गह में बैठी गंदगी ज्यों की त्यों।' ' 37

अनामिका का मानना है कि इस स्त्री मुक्ति संघर्ष में पुरुष स्त्री का विरोधी नहीं है, विरोधी पितृसत्तात्मक व्यवस्था है जिसने स्त्री का ही नहीं पुरुष का भी बहुत बुरा किया है। इसने पुरुष का सम्पूर्ण विकास रोक दिया है। अनामिका स्त्री सामथ्र्य के प्रति आत्मविश्वास से भरी हुई हैं। स्त्री जीवन में आ रहे बदलाव इन्हें आशावादी बनाते हैं। स्त्रियों ने उच्च मानवीय मूल्यों की रक्षा तो की ही है, बदलते समय के साथ अपना विकास भी किया है। लहू-लुहान होना उसकी नियति है पर अब वह इनसे उभरकर वह अपने लिए स्पेस बना रही हैं। स्त्रियाँ आज हर वीरान क्षेत्र को समृद्ध कर रही हैं चाहे साहित्य हो, अध्यापन हो या कोई अन्य क्षेत्र।

'पानी जो पत्थर पीता है' नामक स्त्री विमर्श पर आधारित पुस्तक का प्रकाशन 2005 में हुआ। इसका पहला खंड परिवर्तन है। स्त्री लेखन आज जोरों पर है। पहले स्त्रियाँ कलम उठाती थी तो उनमें 'बेचारी दुख की मारी' वाला भाव होता था। आधुनिक स्त्री लेखन आत्म विश्लेषणपरक है और उसमें मैं का विस्तार बढ़ गया

है। घर में जिस तरह स्त्रियाँ समस्याएँ बाँटकर हल करती हैं, उसका विस्तृत रूप स्त्री विमर्श है। ''मातृ दृष्टि न्याय संचालित तो होती ही है। इस दृष्टि से विचार किया जाए तो स्त्री मुक्ति में सबकी मुक्ति है। जैसे - एक स्त्री को शिक्षित करना पूरे परिवार को शिक्षित करना है, वैसे ही स्त्री मुक्ति सबकी मुक्ति है।' ' 38

इसमें पश्चिमी स्त्रियों के मुक्ति संबंधी विचारों को प्रकट किया है। एक खंड साहित्य नाम से भी है। स्पेस और अवसर कभी मिलते नहीं हैं, ले लिए जाते हैं। चाहे वह स्त्री हो या पुरुष । इन सबसे बड़ी दुर्घटना वैधव्य जीवन है। औरतों के मन में किस तरह की सोच विकसित हो रही है तथा उस सोच को जन्म देने के पीछे क्या प्रेरणा है इसका भी जिक्र किया गया है।

इनके अतिरिक्त स्त्री विमर्श पर अन्य पुस्तकें 'स्त्री मुक्तिः साझा चूल्हा' (2010), स्त्री विमर्श की उत्तर गाथा (2012), स्वाधीनता का स्त्रीपक्ष (2012), स्त्री विमर्श का लोकपक्ष (2012), त्रिया चरित्रं: उत्तरकाण्ड (2012) प्रकाशित हुए।

इनमें हिन्दू, उर्दू समाज, कामकाजी, मुस्लमान, दलित स्त्रियाँ, महादेवी का विरह, स्त्री और कानून, हम पूरबिया औरतें और हमारा स्त्री विमर्श, धार्मिक प्रपंच, स्त्रीवादी चिंतन की मुख्यधाराएँ आदि का विवरण है। स्त्री के विभिन्न रूप हमारे समाने मौजूद रहते

हैं। वह स्नेहमयी माँ है, पत्नी है, बेटी है, बहन है। इसके अलावा कभी वह प्रेमिका और वेश्या का रूप भी ले लेती हैं। अनामिका पश्चिमी दार्शनिकों के दृष्टिकोण को देखने का यत्न करती हैं। 'स्त्री विमर्श की उत्तर गाथा' में प्लेटों कहते हैं ''दार्शनिकों विमर्श बौद्धिक चिन्तन मानव सुलभ कार्यों में सर्वोतम है किन्तु गुलामों, वहशियों और स्त्रियों को इनसे दूर ही रखा जाना चाहिए।'' 39

यहाँ हम ढोल, गँवार, शुद्र, पशु, नारी को याद कर सकते हैं। हमारे यहाँ आज भी रूढ़िवादी कहते हैं कि स्त्रियाँ वेद नहीं पढ़ सकती अरस्तु, कांट, यहाँ तक कि मार्क्स भी पितृसत्तात्मकता के प्रश्न से अलग परम्पराएँ मिलती हैं जो समाज में स्त्री की प्रतिष्ठा की परिचालक हैं। पर्दा प्रथा व सती प्रथा का प्रचलन नहीं था ऐसे संकेत हैं। विधवा पुनर्विवाह भी प्रचलित था। इसमें अनामिका ने विदुषी स्त्रियों की परम्परा व उनके तेजस्वी उद्धरणों को प्रस्तुत किया है। यहाँ किसी प्रकार की आत्महीनता व दैन्य भाव नहीं दिखता उनमें आत्मविश्वास का प्रखर उद्घोष है।

'त्रिया चरित्रं - उत्तरकांड' में अनामिका कहती हंै, ''कुछ लोग विमर्शों के नाम से चिड़ते हैं। वे समझते हैं कि साहित्य की गंगा इनसे दूषित हो रही है। इससे बड़ी भ्रांति कोई हो ही नहीं सकती। विमर्श संाझा चूल्हा है और इनका लक्ष्य है संवाद। संवाद तब तक

होते हैं जब तक परिवर्तन और परिष्कार की कोई उम्मीद हो वरना अबोल हो जाता है या मारकाट शुरू हो जाती है।’ ’ 40

स्त्री आन्दोलन प्रतिशोध पीड़ित नहीं है। स्त्री आन्दोलन की समर्थक स्त्रियाँ पुरुष नहीं बनना चाहती। ये स्त्रियाँ अपनी दैहिक, मानसिक और भाषिक सरंचना पर गर्व नहीं करती। स्त्री-पुरुष के बीच की यह लड़ाई दो वर्गों, दो जातियों, दो दलों, दो राष्ट्रों के बीच की लड़ाई नहीं है यह एक ऐसी लड़ाई है जिसमें सत्ता का हस्तांतरण उतना महत्त्वपूर्ण मुद्दा नहीं जितना व्यक्तियों का शांतिपूर्ण साथ रहना और सामंजस्य है।

स्त्री समाज एक ऐसा समाज है जो वर्ग, नस्ल, राष्ट्र आदि संकुचित सीमाओं से आगे निकल जाता है। जहाँ दमन है चाहे जिस भी वर्ग की स्त्री त्रस्त है, वह उसे अपनी छाया में शरण प्रदान करता है। निम्न वर्गीय और निम्न मध्यवर्गीय स्त्रियों को वोट डालने को भी निजी राय नहीं होती व वोट भी अपने पति के निर्देशों के अनुसार ही डालती है।

आजकल हर साहित्य में स्त्री के देह विमर्श की चर्चा चल रही है। अनामिका का कहना है कि भीतरी आन्दोलन झेलकर ही कोई बाहरी आन्दोलन तक पहुँचता है। अनामिका के स्त्री विमर्श को स्त्री सामथ्र्य का आख्यान भी कहा जा सकता है। अनामिका स्त्री के हरेक

रूप एवं पहलू पर विचार विमर्श और चिंतन मनन के पश्चात स्त्री विमर्श के एक निर्णयात्मक बिन्दु पर पहंॅुची हैं।

1.2.4. कविताओं का सामान्य परिचय

अनामिका आठवें दशक से कविताएँ लिख रही हैं। इनके प्रारम्भिक कविता संग्रह में अपने समय और आस-पास के जीवन के साथ स्त्री जीवन के चित्र भी है। इनकी कोमल भावनाओं तथा विवकेशील और संवेदनशील कलात्मक संयोजन के कारण अनामिका की कविताएँ अलग पहचान बनाती हंै। अनामिका की कविताएँ औरतों के जीवन संदर्भों का चालीसा है। इनकी कविताओं के केन्द्र में स्त्री है, स्त्री संवेदना है, मार्मिकता है, स्त्री का स्त्री होने का दुःख, पीड़ा, उत्पीड़न इन कविताओं के साथ लगा है। कविता मात्र शब्दों का संयोजन नहीं बल्कि कोमल भावनाओं का संयोग है। अनामिका की काव्य अनुभूतियाँ छोटी-छोटी संवेदनाओं से ही सृजित होकर एक बड़ी रचना के रूप में सामने आती हैं।

अनामिका के आठ काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं - शीलत स्पर्श एक धूप को (1975), गलत पते की चिट्ठी (1979), समय के शहर में (1990), बीजाक्षर (1993), अनुष्टुप (1998), कविता में औरत (2004), खुरदरी हथेलियाँ (2005) और दूब-धान (2007)।

अनामिका 1965-70 के जमाने में, जब वे हाई स्कूल में पढ़ती थी, उस समय उनका पहला काव्य संग्रह 1975 में प्रकाशित हुआ - ‘शीतल स्पर्श एक धूप को’ । इस काव्य संग्रह में छोटी-बड़ी 62 कविताएँ हंै। प्रकृति की रमणीयता, उसकी उदासी, बेबसी और रूखेपन आदि के चित्रण इन कविताओं में मिलते हैं।

एक कवि के रूप में अनामिका को विशिष्ट पहचान 1990 में प्रकाशित काव्य संग्रह ‘समय के शहर में’ से मिली है। अनामिका के विषय में ठीक ही कहा गया है कि ‘‘वे सिर्फ कविता में ही नहीं बल्कि अपने सम्पूर्ण लेखन में नारी दृष्टि की एक उदार सांस्कृतिक प्रवक्ता बनकर उभरी हैं। उनका स्वर नई सहस्त्राब्दी का स्वर है। जिसकी स्थिर हलचलों में कुलबुलाते कोमल सवाल अपनी तमाम फितरतों के साथ स्थापित विमर्शों को अस्थिर करते चले जाते हैं।’’ 41

ये अपनी कविता में स्त्री आकांक्षा के प्रश्न सहज निकाल लेती हैं।

‘बेजगह’ कविता में लिखती है -

‘‘जिनका कोई घर नहीं होता

उनकी होती है भला कौन-सी जगह?

कौन-सी जगह होती है ऐसी

जो छूट जाने पर

औरत हो जाती है’ ’ 42

अनामिका अपनी कविताओं में सामाजिक दृश्यों का खुली आँख से सामना करती हंै। निजता और सामाजिकता के संबंध को अंतर्जगत् और बहिर्जगत् के द्वन्द्व और तनाव को अनामिका ने अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया है। ये प्रकृति, मानव के प्रेम और सौन्दर्य को अपनी कविताओं के माध्यम से व्यक्त करती हैं। अनामिका अपनी कविताओं के माध्यम से पढ़ने वाले के सामने एक सजीव चित्रण प्रस्तुत करने में सफल हुई हैं। इनकी कविताएँ किसी वस्तु, व्यक्ति या परिवेश को अनदेखा नहीं करती हंै। प्रेम, दोस्ती, नारी की पीड़ा। उसकी इच्छाएँ सब इनकी कविताओं में मौजूद हैं। अनामिका की कविताएँ स्त्री चिंतन का नया आयाम खोलती हैं। स्त्री चेतना, स्त्री मुक्ति का द्वार है जो समाज में नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को स्थापित करने के लिए आवश्यक बन गई हैं। ‘अनुवाद ’ कविता में ये लिखती हैं:-

‘ ‘इस स्पेस का अनुवाद

विस्तार नहीं ‘अंतरिक्ष’ करूँगी मैं

क्योंकि इसमें मैंने

उड़नतश्तरी छोड़ रखी है।’ ’ 43

‘मौसियाँ’ कविता नारी दुःख को सहने का दूसरा रूप प्रकट करती हंै। मौसियाँ बारिश में धूप की तरह आती है। कहीं-कहीं संकेतों द्वारा पूरा दृश्य स्पष्ट होता जाता है -

‘ ‘चटनी अचार मूंगबड़ियाँ और बेस्वाद संबंध

चटपटा बनाने के गुप्त मसाले और नुस्खे

सारी उन तकलीफों के जिन पर

ध्यान भी नहीं जाता औरों का।’ ’ 44

जो स्त्री को उपभोग की वस्तु के रूप में देखने वाला पुरुषवादी समाज है, ‘स्त्रियाँ’ कविता उस पर एक प्रहार है।

‘ ‘भोगा गया हमकों

बहुत दूर के रिश्तेदरों के

दुःख की तरह

एक दिन हमने कहा

हम भी इंसान हैं,

हमें कायदे से पढ़ों एक-एक अक्षर

जैसे पढ़ा होगा बी.ए. के बाद

नौकरी का पहला विज्ञापन।’ ’ 45

जब स्त्री शोषण से बचना चाहती है तथा अपने अधिकारों की मांग करने लगती है, तब उसकी भाषा तथा भाव आक्रोश एवं विद्रोह से भरे होते हैं। अनामिका का अनुभव संसार बहुत बड़ा है। लोक और स्त्री जीवन की अनुभूति का ऐसा अद्भुत संगम बहुत कम लोगों की काव्य अनुभूतियों में मिलता है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि अनामिका ने अपने उपन्यासों में नारी के हर एक रूप को दर्शाया है। जिसके माध्यम से नारी मुक्ति के साधन को ढँूढ़ने का प्रयत्न करती है। इसमें इन्होंने दलित स्त्री, वेश्या और निम्नवर्गीय स्त्री के विमर्श से जोड़ा है।

समकालीन कवियों में अनामिका अपनी एक अलग भूमिका एवं पहचान बना रही हैं। इनकी कविताओं में आधुनिक प्रसंगों के साथ पुरानी यादों एवं गाँव की संस्कृति की भी साफ तस्वीर नजर आती है। प्राकृतिक रूप से स्त्री को सहना पड़ता है। इसका वर्णन भी इनकी कविताओं में मिलता है।

अनामिका अनुभव की व्यापकता में धनी हैं। इनकी कविताओं में स्त्री संवेदना के अनेक क्षेत्र हैं। ये गृहस्थ स्त्री से लेकर शिक्षित स्त्री तक के सफर को चित्रित करती हैं। आज वे समय और समाज के सारे सवालों से टकराती हैं। समस्याओं और घटनाओं को देखने का उनका दृष्टिकोण एक संवेदनशील नारी का दृष्टिकोण है। इनकी रचनाओं में स्त्री प्रतिरोध की गहरी समझ शामिल होने से समकालीन हिन्दी कविता में एक विशिष्ट पहचान बनकर सामने आयी हैं।

स्त्री विमर्श और आलोचना के क्षेत्र में अनामिका का स्थान बहुत ही उच्च है। अनामिका कहती हैं, भीतरी आंदोलन झेलकर ही कोई बाहरी आंदोलन तक पहुँचता है। स्त्री विमर्श को स्त्री सामथ्र्य का आख्यान भी कहा जा सकता है हिन्दी के स्त्री विमर्श के प्रति इनका विश्वास निश्चय ही हिन्दी जगत् के प्रति सुखद है।

संदर्भ

प्रथम अध्याय

1. अनामिका, एक ठो शहर: गो लड़की, इतिहासबोध प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. 2005, पृ.सं.-43
2. अभिषेक कश्यप, अनामिका: एक मूल्यांकन, सामयिक बुक्स, नयी दिल्ली, प्र. सं. 2013, पृ.सं. 508
3. अनामिका , एक ठो शहर: गो लड़की, इतिहासबोध प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. 2005, पृ.सं. 41
4. वही, पृ.सं. 41
5. वही, पृ.सं. 40
6. वही, पृ.सं. 25
7. अभिषेक कश्यप, अनामिका: एक मूल्यांकन, सामयिक बुक्स, नयी दिल्ली, प्र.सं. 2013, पृ.सं. 511
8. वही, पृ.सं 510
9. वही, पृ.सं. 510

10. मदन कश्यप, लेख: ठूंठ पर पत्ती के फूट पड़ने की जिद्दी धमक, अनामिका: एक मूल्यांकन, अभिषेक कश्यप, सामयिक बुक्स, नयी दिल्ली, प्र. सं. 2013, पृ.सं. 49

11. अनामिका, लेख: ये मेरे दो उपन्यास, वही, पृ.सं. 165

12. अनामिका, पर कौन सुनेगा, अंकुर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. 1983, पृ. 9

13. वही, पृ.सं. 19

14. अनामिका, मन कृष्ण, मन अर्जुन, साहित्य रत्नालय, कानपुर प्र. सं. 1984, पृ.सं. 8

15. अनामिका, अवान्तर कथा, किताब घर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. 2000, पृ.सं. 9

16. वही, पृ.सं. 54

17. वही, पृ.सं. 70

18. वही, पृ.सं. 80

19. वही, पृ.सं. 88

20. नामवर सिंह, लेख: स्त्री मुक्ति के नए आयाम, अनामिका: एक मूल्यांकन, अभिषेक कश्यप, सामायिक बुक्स, नयी दिल्ली प्र. सं. 2013, पृ.सं. 173

21. अनामिका, दस द्वारे का पींजरा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. 2008, पृ.सं. 21

22. वही, पृ.सं. 123

23. वही पृ.सं. 206

24. नामवर सिंह, लेख: स्त्री मुक्ति के नए आयाम, अनामिका: एक मूल्यांकन, अभिषेक कश्यप, सामयिक बुक्स, नयी दिल्ली, प्र.सं. 2013, पृ.सं. 174

25. अनामिका, दस द्वारे का पींजरा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं. 2008, पृ.सं. 93

26. नामवर सिंह, लेख: स्त्री मुक्ति के नए आयाम, अनामिका: एक मूल्यांकन, अभिषेक कश्यप, सामयिक बुक्स, नयी दिल्ली, प्र.सं. 2013, पृ.सं. 175

27. अनामिका, तिनका तिनके पास, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं. 2008, पृ.सं. 275

28. वही पृ.सं. 24

29. सुनीता कुमारी गुप्ता, लेख: चिड़िया, घोंसला और आकाश, अनामिका: एक मूल्यांकन, अभिषेक कश्यप, सामयिक बुक्स, नयी दिल्ली, प्र.सं. 2013, पृ.सं. 232

30. अनामिका, तिनका तिनके पास, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं. 2008, पृ.सं. 254

31. अनामिका, बिल्लू शेक्सपियर: पोस्ट बस्तर, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं. 2014, पृ.सं. 172

32. वही, पृ.सं. 174

33. वही, पृ.सं. 29

34. वही, पृ.सं. 29

35. अनामिका, एक ठो शहर: एक गो लड़की, इतिहासबोध प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. 2005, पृ.सं. 15

36. अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र, सारांश प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं. 1999, पृ.सं. 39

37. अनामिका, मन मांझने की जरूरत, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं. 2006, पृ.सं. 3

38. अनामिका, पानी जो पत्थर पीता है, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, प्र.सं. 2005, पृ.सं. 17

39. अनामिका, स्त्री विमर्श की उत्तरगाथा, सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं. 2012, पृ.सं. 23-24

40. अनामिका, त्रिया-चरित्रं: उत्तर कांड, आधार प्रकाशन, पंचकुला, हरियाणा, प्र.सं. 2012, पृ.सं. 14

41. अनामिका, कवि ने कहा: कुछ चुनी हुई कविताएँ, किताब घर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं. 2016, पृ.सं. 24

42. वही, पृ.सं 11-12

43. वही, पृ.सं. 124

44. वही, पृ.सं. 14

45. वही, पृ.सं. 9